CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

महिला सशक्तिकरण एंव शिक्षा

डॉ0 पंकज कुमार, +2 शिक्षक, राजनीति विज्ञान, बी॰ बी॰ कॉलेजिएट, मुज0

Received: 06/01/2018	Edited: 18/01/2018	Accepted: 30/01/2018

सार संक्षेप: *स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में महिलाओं की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जहाँ महिलाओं की पहुँच न हो। राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राज्यपाल, राजदूत, न्यायाधीश इत्यादि पदों को महिलाएँ सुशोभित करती आयी हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में महिलाएँ अधिक सशक्त हुई हैं। सशक्तिकरण अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। 21वीं सदी महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी, इसमें कोई आशंका नहीं है।*

भारतीय महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की है। स्थल, जल एंव नभ तीनों क्षेत्र में महिलाएँ सफलता का परचम लहरा रही हैं। ये उपलब्धियाँ जितना सच है उतना ही सच उनका अंधकारमय पक्ष भी है। पूरे विश्व में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में शिक्षा का स्तर आधे से भी कम है। भारत में भी स्थिति संतोषप्रद नहीं है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, वहीं पुरूष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है। यह इस बात का साफ संकेत है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 71 वर्ष बाद भी महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास नहीं किये गये। महिला सशक्तिकरण वर्ष 2001 के लगभग 17 वर्ष बाद भी भारतीय महिलाएँ उस मुकाम को प्राप्त नहीं कर सकी हैं, जिसकी हकदार वे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण शिक्षा के क्षेत्र में यथोचित प्रगति का अभाव है। विषय सिर्फ साक्षरता का नहीं अपितु पूरी शिक्षा का है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा के लिए दीर्घकालीन योजना बनाकर उस पर अमल करना होगा अन्यथा वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा के इस दौर में हम कितना पीछे छूट जायेंगे इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मुख्य शब्द : *सशक्तिकरण, विकास, साक्षरता, जनगणना, असमानता आदि।*

अध्ययन की विधि: प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

परिचय: भारत में पुरूष सत्तात्मक समाज सदियों से आज तक कायम है। इस पुरूष सत्तात्मक समाज में महिला नेतृत्व को स्वीकार करना कभी आसान नहीं रहा है। यह एक बड़ी वजह है महिलाओं के पिछड़ेपन की। शिक्षा विकास की कुंजी है। इसके बगैर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास संभव नहीं है। कोई भी समाज तब तक उन्नत नहीं हो सकता जब तक वह शिक्षित नहीं हो। अशिक्षित समाज में प्रगति के रास्ते बंद रहते हैं।

भारत में सदियों से महिलाओं को शिक्षा से बंचित रखा गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय महिलाओं की साक्षरता दर केवल 8.9 प्रतिशत थी।[1] 2011 की जनगणना में महिला साक्षरता दर भले ही 65.46 प्रतिशत तक पहुँच गयी हो किंतु वास्तविकता तो यही है कि अभी भी सौ में से 34.54 प्रतिशत महिलाएँ निरक्षर हैं। सवाल केवल साक्षरता का नहीं अपितु शिक्षा का है। ड्राप आउट [2] में बालिकाओं की संख्या सर्वाधिक है। एक तरफ महिला सशक्तिकरण का अभियान तो जोर शोर से चलाया जा रहा है, परंतु दूसरी तरफ महिलाओं का शैक्षिक ग्राफ संतोषप्रद मुकाम तक पहुँच नहीं पा रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण पुरूषवादी मानसिकता है। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को वास्तविक रूप देने के लिए उनको शैक्षिक रूप से सशक्त करना होगा। शैक्षिक सशक्तिकरण से महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होगा।

अवधारणात्मक विवेचन: 21 वीं सदी के विश्व में समावेशी शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। यहाँ तक की संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जब धारणीय विकास के लक्ष्य निर्धारित किये गये तब उसमें भी समावेशी शिक्षा को काफी महत्व दिया गया। दुर्भाग्यवश आज भी शिक्षा से वंचित वर्गों में पूरे विश्व में सबसे बड़ा हिस्सा महिलाओं का है। पूरे विश्व में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में शिक्षा का स्तर आधे से भी कम है।[3] भारत में भी स्थिति संतोषप्रद नहीं है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता का 82.14 प्रतिशत जबकि महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है। महिला पुरूष साक्षरता दर में 16.68 प्रतिशत का बड़ा अंतर विद्यमान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिला पुरूष साक्षरता दर में उतार–चढ़ाव देखने को मिलते हैं। आगे की तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है।[4]

भारत में महिला–पुरूष साक्षरता दर 1951–2011

जनगणना वर्ष	पुरूष	महिला	अंतर
1951	27.16	8.16	18.30
1961	40.4	15.35	25.05
1971	45.96	21.97	23.98
1981	56.38	29.76	26.62
1991	64.13	39.29	24.84
2001	75.26	53.67	21.59
2011	82.14	65.46	16.68

उपर्युक्त आंकडे से यह स्पष्ट है कि पुरूषों की तुलना में महिलाओं की शिक्षा दर काफी कम है। हालांकि 1951 की जनगणना में महिला साक्षरता दर केवल 8.84 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 65.46 तक अवश्य पहुँच गयी है किंतु अब भी महिलाओं की एक बड़ी आबादी निरक्षर है। देश में कुछ राज्य ऐसे भी हैं जहाँ महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है। कुछ राज्य ऐसे भी है जहाँ महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। आगे की तालिका में इसका उल्लेख किया गया है।

उच्च महिला साक्षरता दर वाले राज्य

राज्य	महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में)
केरल	91.98
मिजोरम	89.40
लक्षद्वीप	88.25
त्रिपुरा	83.15
गोवा	81.84
अंडमान निकोबार द्वीप समूह	81.84
चंडीगढ़	81.38
पुडुचेरी	81.22
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	80.93
दमन और दीव	79.6
नागालैंड	79.7
हिमाचल प्रदेश	76.6
सिक्किम	76.4
महाराष्ट्र	75.5

निम्न महिला साक्षरता दर वाले राज्य

(राष्ट्रीय औसत 74.04% से कम साक्षरता वाले राज्य)

राज्य	महिला साक्षरता दर (प्रतिशत में)
तमिलनाडु	73.9
मेघालय	73.8
मणिपुर	73.2
पंजाब	71.3
पश्चिम बंगाल	71.2
उतराखंड	70.7
गुजरात	70.7
कर्नाटक	68.1
असम	67.3
हरियाणा	66.8
उड़ीसा	64.4
छत्तीसगढ़	60.6
मध्यप्रदेश	60.0
आंध्र प्रदेश	59.7
उत्तर प्रदेश	59.3
जम्मू कश्मीर	58.0
झारखंड	56.2
बिहार	53.3
राजस्थान	52.7

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूरे भारत में केरल ऐसा राज्य है जहाँ महिला साक्षरता–दर 91.98 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान पर है वहीं राजस्थान में महिला साक्षरता दर केवल 52.7 प्रतिशत है जो संपूर्ण भारतवर्ष में निम्नतम है। उपर्युक्त तालिका प्रस्तुत करने का आशय यह था कि यह अच्छी तरह स्पष्ट हो सके कि भारत में राज्यवार महिला साक्षरता दर की क्या स्थिति है। उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि देश में उन्नीस ऐसे राज्य है जहाँ महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत (National everage Literacy) से भी कम है। भला ऐसे में महिला सशक्तिकरण की सोच को साकार रूप कैसे दिया जा सकता है? यह बड़ा गंभीर मसला है जिसपर हमें गंभीरतापूर्वक सोचना होगा।

भारत गांवों का देश है। देश की अधिकांश आबादी गांवों में निवास करती है। दुर्भाग्यवश आजादी के 71 वर्षों बाद भी गांवो का समुचित विकास नहीं हो पाया है। जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है, शहरों की तुलना में ग्रामीण साक्षरता दर निम्न है। रही बात महिला साक्षरता की तो स्थिति चिंताजनक है। निम्न आँकड़े इस बात की पुष्टि करते है।[5]

ग्रामीण महिला साक्षरता दर (1961–2011)

वर्ष	ग्रामीण महिला साक्षरता (प्रतिशत में)
1961	11
1971	16.86
1981	21.35

1991	30.17
2001	46.12
2011	58.75

वर्तमान जनगणना (2011) के अनुसार ग्रामीण महिला साक्षरता दर केवल 58.75 प्रतिशत है अर्थात लगभग 41 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ निरक्षर हैं। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि समावेशी शिक्षा की कल्पना साकार होने में अभी वक्त लगना तय है। विशेष एवं सघन अभियान चलाकर महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित करना होगा। यही एकमात्र विकल्प है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो फिर महिला सशक्तिकरण का ख्वाब अधूरा ही रह जायेगा।

ड्राप आउट यानि पढ़ाई बीच में छोड़ देना एक गंभीर समस्या है खासकर महिलाओं के बीच। इसके कई कारण हैं। यहाँ एक बात गौर करने वाली है कि ड्राइ आउट की समस्या अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं में सर्वाधिक है। इसके कई भौतिक कारण हैं। विद्यालय में बालिकाओं के लिए समुचित सुविधाओं का अभाव एवं आवागमन की असुविधा के साथ ही साथ परिवार की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति भी काफी जिम्मेवार है। आगे की तालिका में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक एंव बालिका की साक्षरता दर को दर्शाया गया है जो यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि इन वर्गो में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति कतई संतोषप्रद नहीं है।[6]

साक्षरता दर (7 वर्ष से अधिक प्रतिशत में)

जनगणना वर्ष 2011

	कुल	अजा॰	अजजा॰
योग	73.0	66.1	59.0
बालक	80.9	75.2	68.5
बालिका	64.6	56.5	49.4

वयस्क साक्षरता दर (15 वर्ष से अधिक) प्रतिशत में

	जनगणना वर्ष 2011			जनगणना वर्ष 2011		
	कुल	अजा॰	अजजा॰	कुल	अजा॰	अजजा॰
योग	61.0	44.1	40.8	69.3	60.4	51.9
बालक	73.4	59.3	54.8	78.8	71.6	63.7
बालिका	47.8	28.5	26.7	59.3	48.6	40.2

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की बालिकाओं एवं किशोरियों में साक्षरता की स्थिति राष्ट्रीय औसत के काफी कम है।

एक बड़ा सवाल यह है कि महिलाओं की निम्न साक्षरता दर के लिए जिम्मेवाद कौन है? अक्सर ऐसे प्रश्नों के जवाब में भौतिक कारणों को जिम्मेवाद ठहरा दिया जाता है, परन्तु वास्तविक स्थिति कुछ और भी है। इन कारणों में प्रमुख है

(क) सामाजिक कारण
(ख) सांस्कृतिक कारण
(ग) परिवार में बालक एवं बालिकाओं मे विभेद
(घ) बालिका को माता पिता द्वारा एक जिम्मेदारी के रूप में देखना
(ड़) पितृसतात्मक समाज
(च) विवाह में पनपी कुरीतियॉ
(छ) परिवार में शैक्षिक माहौल का अभाव
(ज) विद्यालय में समुचित सुविधा का अभाव
(झ) आवागमन की सुविधा का अभाव
(ट) महिलाओं में जागरूकता का अभाव

उपरोक्त कारणों के अलावे अन्य अनेक कारण है। मनुष्य का यह सामान्य लक्षण है कि वह परंपराओं की बेड़ियों में जकड़ा रहता है। अपने बचपन से जो देखते आता है उसका गहरा प्रभाव उसके मन मस्तिष्क पर पड़ता है। महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार सदियों से किया जाता रहा है। हम जो देखते है वहीं सीखते हैं। रही सही कसर प्राचीन ग्रंथ भी पूरा कर देते हैं। उदारहणस्वरूप त्रग्वेद में लिखा है ''स्त्री के मन को शिक्षित नहीं किया जा सकता। उसकी बुद्धि तुच्छ होती है।[8] इसी पुस्तक में लिखा है कि ''स्त्रियों के साथ मैत्री नहीं हो सकती। इनके दिल लक्कड़बग्घों के दिलों से क्रुर होते हैं।[9] अन्य अनेक ग्रंथों में महिलाओं के संदर्भ में इसी तरह की बातें लिखी गई है।[10] स्वाभाविक है इसका असर हमारे मन मस्तिष्क पर पड़ेगा ही। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी सोच विकसित करें। सभ्यता की उन्नति में महिलाओं के

योगदान को कतई भुलाया नही जा सकता। महिलाएँ समाज की आधारशिला है। इनके बगैर सृष्टि की कल्पना ही संभव नहीं है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि महिलाओं ने अपने उपर किये जा रहे जुल्म के खिलाफ आवज बुलंद की हैं। इसमें पुरूषों द्वारा भी सहयोग प्रदान किया गया है। स्त्री संघर्ष का इतिहास काफी लंबा है। स्वतंत्रता के बाद इसमें काफी गति आयी। स्वतंत्रता से पूर्व 1930 के दशक में सभी हिंदू व्यक्तिगत कानूनों को एक परिष्कृत समेकित सार्वभौम कानून के अंतर्गत लाकर समान नागरिक संहिता के निर्माण की मांग की गई।[11] इन सबका प्रभाव भारतीय संविधान में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के उपरांत महिलाओं के कल्याणार्थ अनेक कदम उठाये गये। हाल ही में बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई गईं जिनमें कुछ प्रमुख हैं।

(क) बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
(ख) सुकन्या समृद्धि योजना
(ग) बालिकाओं के लिए छात्रावास की स्थापना
(घ) कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय की स्थापना
(ड़) महिला स्वास्थ्य योजना की शुरूआत

निःसंदेह इन योजनाओं के क्रियान्वयन से महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में काफी सुधार आया है किंतु अभी इस दिशा में लंबी दूरी तय करना बाकी है।

निष्कर्ष: महिला सशक्तिकरण समय की मांग है। अफसोस अभी इसे एक जुमला की तरह इस्तेमाल किया गया है। इस जुमलेबाजी से निकले बगैर समरस समाज की स्थापना संभव नहीं है। महिला सशक्तिकरण की परिकल्पना तभी संभव हो सकती है जब महिलाएँ शिक्षित हों। बगैर समुचित शिक्षा के महिलाओं का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। इतिहास को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं करना एक बड़ी समस्या रही है। पिछले लगभग 150 वर्षो में भारत के इतिहास को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया है। यही कारण है कि महिलाओं के प्रति भेदभाव को समाजिक एंव सांस्कृतिक आधार प्रदान कर दिया गया। आज की युवा पीढी को इस ऐतिहासिक भ्रम से बाहर निकलना आवश्यक है। भारत का प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में महिला साक्षरता की परंपरा अति प्राचीन है। वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार था। वेदों की अनेक ऋचाओं की रचना महिला ऋषियों द्वारा की गई है। मैत्रेयी, गार्गी, मदालसा, लोपामुद्रा, अनुसूया आदि अनेक महिला विदुषियों ने वेंद की ऋचाओं में से 60 प्रतिशत मंत्रों की रचना की। इतना सुनहरा इतिहास होने के बावजूद कालांतर में महिलाओं को हाशिये पर डाल दिया गया। विकास का सर्वोत्तम औजार शिक्षा से वंचित कर महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार आरंभ कर दिया गया जो कमोवेश आज भी जारी है।

21 वीं सदी का भारत तरक्की की राह पर तभी अग्रसर होगा जब महिलाएँ शिक्षित होंगी। बगैर महिलाओं के सशक्त हुए विकसित भारत की कल्पना भी संभव नहीं है। हमें पुरूषवादी मानसिकता को त्यागकर समरस समाज की स्थापना करनी होगी। अगर ऐसा नही हुआ तो सशक्त भारत की स्थापना संभव नहीं है।

संदर्भ :

1. योजना, सितंबर 2016 पृ0 सं0 37
2. प्रवेश लेने के बाद विद्यालयीय शिक्षा से दूर जाने वाले–छिटके हुए।
3. योजना सितंबर 2016 पृ0 सं0 307
4. डॉ कुमार पंकज, डॉ कुमार दीपक : आधी आबादी एक हकीकत,सुधा प्रकाशन, पटना , पृ0 सं0 158
5. वही, पृ0 सं0 158
6. योजना, सितंबर 2016 पृ0 सं0 37
7. वही पृ0 सं0 37
8. नाथ राकेश : क्या हिंदू नारी आज भी उपेक्षित नहीं? विश्व बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 13
9. वही, पृ0 सं0 13
10. कुमार राधा : स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0 सं0 140